ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-9* october- 2017
Innovation The Research Concept

तैल चित्रण के प्रथम विलक्षण चितेरे ''राजा रवि वर्मा'' समीक्षात्मक अध्ययन

सारांश

किसी भी विषय पर शोध उस विषय को और अधिक परिपक्व बनाता है, और परिपक्वता उसे फिर और शोधित करती है। अतः उपरोक्त आधार पर कुछ पहलू जो उभर कर सामने आये है उन्हें सारांशतः उल्लेखित करने का प्रयास किया है। सम्भवतः किसी एकमात्र निष्कर्ष को सम्बोधित करना या किसी एक निश्चित आधार को लिपिबद्ध करना उचित नहीं होगा। अतएवं सम्पूर्ण दीर्घकालिक विस्तृत एवं गहन शोध के उपरान्त जो तथ्य मेरी अपनी विचार धारा को संतुष्ट कर पाये है, उन्हें अति सारांश रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द : तैल चित्रण, राजा रवि वर्मा, चित्रकला।

कावेरी विज
शोधार्थिनी
चित्रकला विभाग,
सेंट मैरी कान्वेंट कॉलेज
इलाहाबाद

मधु अस्थाना
व्याख्याता
चित्रकला विभाग,
सेंट मैरी कान्वेंट कॉलेज
इलाहाबाद

प्रस्तावना

18वीं शती के बाद भारत में अंग्रेजों के आगमन के पश्चात् दिल्ली कलम, लखनवी कलम, पटना कलम तथा दक्षिण कलम के नाम से विभिन्न शैलियां विकसित हुईं। 19वीं शतीं में विदेशी कला वातावरण में कलाकार का जीवन सिमट कर रह गया था। उसका अपना अस्तित्व लुप्त होता जा रहा था। भारतीय कला कल्पना और आदर्श से पूरित रही है। परन्तु इसी समय भारत में तैल चित्रण करने वाले कलाकार **राजा रवि वर्मा** का उदय हुआ जिनके चित्रों के विषय तो पूर्णतयाः भारतीय थे परन्तु काम करने का तरीका विदेशी था। राजा रवि वर्मा इस यूरोपीयन् शैली से प्रभावित थे उन्होंने भारतीय होने के नाते अपने चित्रण का विषय नहीं बदला, परन्तु यूरोपीयन् शैली अपनाकर एक नवीन शैली विकसित करी।

कला की कई परिभाषाओं में कभी उसे कलाकार की पूर्ण व्यक्तिगत अनुभूति की अभिव्यंजना माना गया है, तो कभी उसे सामाजिक परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब कहा गया है। ऐतिहासिक गुणों के साथ युगान्तकारी परिवर्तन अवश्यंभावी है। कला में भी समयानुसार रूप गुण में परिवर्तन आते गये, परन्तु वह अपने पावन उद्देश्य का आनन्द सृष्टि से, कभी विलग न हुई। कलात्मक संतुलन एवं भावात्मक सामंजस्य का परिवर्तन ही इतिहास के पृष्ठों में युगों में परिवर्तित होता चला गया।

अध्ययन का उद्देश्य

जब पहली बार मैने नेशनल माडर्न आर्ट गैलरी, नई दिल्ली में प्रदर्शित राजा रवि वर्मा की पेन्टिंग को देखा तो मैं प्रभावित हुए बिना न रह सकी, परन्तु अपनी कला शिक्षा के दौरान जब मैंने उनकी आलोचनाओं को पढ़ा तो मैं हतप्रभ रह गयी कि कृतियॉ तो अतुलनीय है फिर यह आलोचना? प्रस्तुत शोध इसी जिज्ञासु व्यथा को धीरता देने का प्रयत्न है। मेरा तैल चित्रण के प्रथम विलक्षण चितेरे ''राजा रवि वर्मा'' पर किया गया समीक्षात्मक अध्ययन, अवश्य ही भावी पीढ़ी को चित्रकार की कलात्मकता एवं योगदान का परिचय करायेगा। मेरा शोध करने का उद्देश्य भी यहीं था कि आलोचनाओं के बवंडर में फंसे रवि वर्मा की समय, परिस्थिति के तथ्यों को उजागर कर एक नयी दृष्टि प्रदान कर सकूँ। मेरा विश्वास है कि भावी युवा पीढ़ी चित्रकार से प्रभावित व प्रेरित हो सकेगी मेरा शोध उनके लिये दिशा निर्देश का कार्य कर सकेगा। मेरा यह प्रयास कला जगत के इतिहास के कुछ नये तथ्यों पर अवश्य प्रकाश प्रदान कर सकेगा।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध ग्रंथ में मैने जो विचार व्यक्त किये हैं वो मेरी भावनाओं की मौलिक अभिव्यक्ति है।

चित्रकला के क्षेत्र में रंग और रेखायें ही कोई संदेश नहीं देती अपितु उनमें ध्वनि होती है, लय होती है जिनका अंतिम उद्देश्य कलाकार की आन्तरिक और बाह्य कल्पना का सम्प्रेषण एवं एक सानुपातिक समग्रता का विकास करना होता है।''[1]

–रविन्द्रनाथ टैगोर

भारतीय चित्रकला के क्षितिज पर राजा रवि वर्मा का उदय ऐसे समय में हुआ था जब एशिया महाद्वीप के प्रायः सभी भागों की कला–परम्परा नाजुक राजनीतिक दौर से गुजर रही थी। ब्रिटिश शासकों की अपेक्षा एवं अन्य ऐतिहासिक एवं राजनीतिक कारणों से राजघरानों में पल्लवित तथा विकसित

लघु चित्रकला प्रायः दम तोड़ चुकी थी। चारों ओर पश्चिमी प्रभाव की एक मिश्रित शैली का प्रभुत्व बढ़ रहा था। श्रेष्ठ भारतीय कला परम्परा के इस ह्रासोन्मुख काल में कला–दक्ष परिश्रमशील राजा रवि वर्मा ने भारतीय धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित चित्र रचनायें बनाकर दर्शकों व कला प्रेमियों पर अपनी आकर्षक एवं मनोरम कला की गहरी छाप छोड़ी। उन्होंने प्राचीन केरल के किलीमन्नुर राजघराने की सांस्कृतिक एवं कलात्मक अभिरूचि को विकसित किया तथा अपनी अभिराम रंग योजन के माध्यम से अनेक जीवन्त चित्रों का सृजन किया।[2]

उन्नीसवीं सदी में भारतीय हिन्दू कला का जो नवोत्थान हुआ था उसको भी रवि वर्मा ने प्रशंसनीय योगदान दिया था। स्वतः वे आस्तिक एवं भारतीय संस्कृति के समर्थक थे। वे पराशक्ति श्रीमूकांबिका देवी के आर्शीवाद से विश्व में ख्याति प्राप्त कर गये।

नियमित रूप से श्री ललिता सहस्त्रानामा का पाठ करते थे तथा देवी की पूजा अर्चना के प्रति निष्ठावान थे।

महाकवि कालीदास की काव्यनायिकाओं एवं काव्य संदर्भो का समुचित वर्णन अपने चित्रों के द्वारा प्रतिबिंबित किया तथा पुराणकथाओं और 'रामायण–महाभारत' ने रवि वर्मा की कल्पनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया। भारत में ही नहीं अपितु संसार में एक क्लासिक संस्कृति फैलाई।

"To wards the end of the nineteen century, Raja Ravi Varma's Paintings emerged as the first important signifires of "modernity" and "nationality" in the Indian art scene. From being a colonial import, the idea of modernity had by then, been fully accommodated within the agenda of Indian nationalism. A new breed of Indian artists, even as they found their modern self constituted through the initiation in western ideas, styles and techniques, were impielled to supersede their colonised status and westernised identity within a reformulated, 'Indian' authenticity. A sharp sense of a break with the past coexisted with an urge to selectively appropriate elements of that past (received, refined and reimagined by nationalism) in the devising of new artistic idioms.[3]

रवि वर्मा ने कला की जो नयी धारा दी वो भारतीय व यूरोपीय कला शैलियों के एक सफल समन्वय की प्रस्तुति थी, जिसमें उन्होंने अपनी एक निजी विशेषता पैदा की। इस सफल समन्वय के पीछे रवि वर्मा की कला प्रतिभा, अथक परिश्रम और इन दोनों शैलियों को गम्भीरता पूर्वक समझने की उनकी प्रवृत्ति का बहुत बड़ा योगदान रहा। इस प्रकार के समन्वय को जन्म देने वाले वे पहले चित्रकार थे।

प्रारंभिक शिक्षा तंजाऊर शैली में प्राप्त करने पर भी रवि वर्मा का आकर्षण तैल रंगों की तरफ हुआ। महाराज अयिलियम तिरूनाल के प्रोत्साहन तथा सहयोग से रवि वर्मा ने तैल चित्रण की तकनीक को आत्मसात करने की पुरजोर कोशिश करी। परन्तु उस समय तैल तकनीक नवीन थी। मोटे चौड़े, ब्रश, ईजल, कैनवास सब कुछ नया था, अनजाना था। नवीनता को आत्मसात तथा प्रयोगिता में विश्वास रखने वाले, आधुनिक चित्रकारों की भांति रवि वर्मा ने भी अपने अथक प्रयास से इस तकनीक को जाना ही नहीं वरन् महारत भी हासिल करी। तैल रंगों में अपनी निजी तकनीक के साथ काम करने वाले ''**प्रथम भारतीय चित्रकार**'' के रूप मे विख्यात रहे।

रवि वर्मा के छोटे भाई की लिखी डायरी से इनके चित्रण करने की तकनीक का पता चलता है। रवि वर्मा सुबह तड़के पांच बजे ही अपने स्टूडियों में पहुँच जाते थे। धोती पहनते थे तथा ऊपर का जिस्म अक्सर वस्त्रहीन रहता था (बाहर जाते समय पगड़ी तथा कोट पहन लेते थे) सबसे पहले तम्बाकू के पान का बीड़ा मुँह में डालते कुछ देर बाद एक पीक थूकते, फिर डिबिया से सुंघनी तम्बाकू उंगलियों की चुटकी में लेकर बारी–बारी से दोनों नथुनों में डालते, धोती के एक छोर से नाक की सुंधनी एवं होठों के पान को साफ करते और हो जाते एकदम तैयार। कैनवास को ईजल पर लगाने, ब्रश साफ करने, रंग बनाने आदि का सभी काम छोटे भाई सी. राजा वर्मा ही करते। रवि वर्मा पेन्टिंग का मुख्य भाग ही चित्रित करते, अक्सर एक विशाल चित्र में सिर्फ नायक या कभी–कभी तो मात्र चेहरा ही, बाकी चित्र राजा वर्मा पूरा करते, बैकग्राउण्ड, प्रकृति तथा अन्य चेहरे इत्यादि। चित्र पूरा होने पर हस्ताक्षर रवि वर्मा ही करते थे। राजा वर्मा, रवि वर्मा से बारह वर्ष छोटे थे। चित्र रचना में वे भी रवि वर्मा से कम नहीं थे परन्तु बड़े भाई के लिये उन्होंने अपनी चित्रकारिता की कुर्बानी दे दी। वे रवि वर्मा के भाई भी थे, सेक्रेटी भी थे तथा मैनेजर भी थे।

रवि वर्मा का चित्रकार मस्तिष्क हर समय, चित्रण, विषय, पृष्ठभूमि इत्यादि सोचता व खोजता रहता था। चित्र निर्माण करते समय वे तन–मन से सतत् प्रयास करते। रात दिन अधिकतर स्केच बनाने और रंग लगाने में व्यतीत होता था। कभी कभी चित्र पूरा न हो पाने के समय खाने पीने से समझौता करते तथा रात में निद्रा के बीच उठ कर स्केच पूर्ति भी करते।

इस प्रकार अपनी निजी तकनीक से तैल चित्रण करना आजकल एक आम बात है परन्तु जिस वक्त रवि वर्मा ने इसे अपनाया तो रासायनिक रंग बड़े–बड़े ब्रश तैल रंग एकदम नये अजनबी व अभूतपूर्व थे।

श्रेष्ठ भारतीय कलाओं के इस ह्यसोन्मुख काल में कला दक्ष परिश्रमशील रवि वर्मा ने पौराणिक, धार्मिक, ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित विशाल चित्र बनाकर कलाप्रेमियों को अपनी तरफ आकर्षित कर लिया तथा गहरी छाप छोड़ी।

विदेशी तकनीक अपनाने के बावजूद रवि वर्मा के चित्र पूर्णतया भारतीय है। वे विषय की गहराई तक जाते अनेकों स्केच बनाते तब कही चित्र पूरा करते थे। अपनी निजि और विशेष शैली के अविष्कारक रवि वर्मा ने अनगिनत चित्रों का निर्माण किया था। स्वअध्ययन करने के कारण किसी की भी शैली का प्रभाव रवि वर्मा पर नहीं पड़ा यह उनकी अपनी निजी शैली बन गयी।

चित्रकर का स्वभाव एवं विचार उसके चित्रण पर स्पष्ट छाप छोंड़ते है। रवि वर्मा, धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे, भारतीय पुराणों से उन्हें विशेष लगाव था, वे परोपकारी, मृदुभाषी, बुद्धिशील, स्वअध्यायी, सिद्धहस्त, मिलनसार, प्रबल ग्राह्यशक्ति, राष्ट्रीयता, कर्मठ, निश्च्छल हृदय, विषयानुरागी, प्रतिभा सम्पन्न, मानवीय, संवेदनात्मक, संस्कृत तथा कलात्मक अभिरूचि से सम्पन्न कलाकार थे। इसी व्यक्तित्व से उनकी कला शैली निर्धारित एवं निरूपित हुई।

रवि वर्मा शान्त प्रकृति के थे। अतः उनके चित्रों में सौम्य और हल्कें रंगों का प्रयोग हुआ है कहीं भी चटकीलें एवं भड़काऊ रंग नजर नहीं आते हैं।

प्रारम्भ में, मामा राजा राजा वर्मा तंजाऊर शैली के चित्रकार थे अतः रवि वर्मा को भी तंजाऊर शैली जानने और

समझने का अवसर मिला था, इसमें प्रयोग होने वाले वनस्पति, धातु तथा खनिज रंगों से भित्तियों या शीशे पर चित्रण होता था।

परन्तु आधुनिक चित्रकारों की भांति नवीनता की खोज ने रवि वर्मा को तैल चित्रण की तरफ आकर्षित किया। वे कुछ ऐसा करना चाहते थे जो अब तक किसी ने न किया हो।

सौम्य चेहरा, विषयानुरूप भाव, पृष्ठभूमि, रंगों का चयन तथा परिप्रेक्ष्य, छाया प्रकाश इत्यादि के साथ–साथ वस्त्रों और वस्त्रों की सिलवटों का विशेष ध्यान रख कर चित्रण करते थे। आभूषण चित्रण में तो रवि वर्मा के टक्कर का कोई चित्रकार नहीं है। एकदम सजीवता से आभूषणों का चित्रण किया है फिर वो चाहे व्यक्ति चित्र हो या कथा चित्र। चित्र के किसी भी भाग को वे अनदेखा नहीं करते थे चाहे खिडकी के बाहर का थोड़ा सा ही भाग क्यों न हो, पूर्णतयः सजीवता से चित्रित करते थे। यूरोपीयन चित्रकारों की भांति मॉडल का प्रयोग करते थे।

अकादमिक शिक्षा की भांति चित्र में प्रयुक्त होने वाले एलीमेंट तथा सिद्धान्तों का प्रयोग रवि वर्मा के चित्रों में भली भाँति दृष्टव्य है। यथार्थशैली के परिपक्व यूरोपीय चित्रकारों की भांति रेम्ब्रा, रेफिल, वीरमर या डेविड, माने इत्यादि को टक्कर देने वाले चित्र रचे। कम्पोजीशन, मानव आकृतियाँ सभी के साथ रवि वर्मा ने न्याय किया। मानव आकृतियों को पूर्ण रूप से संतुलित भारतीय सौंदर्य मानक के गुणों से परिपूर्ण रचा।

चयनित रंगों के प्रभाव से चित्र की गुणवत्ता बढ़ायी। चित्र में प्रयुक्त रंग सदैव शान्त, वातावरण प्रदान करने वाले सौम्य और गम्भीरता उत्पन्न करने वाले है। उनकी रंग योजना सदैव ही आंखों को भाने वाली होती थी तथा दर्शकों के मन में गंभीर भाव उत्पन्न करती है। हल्का पीला, भूरा, लाल, बैगनी, हरा तथा काले रंग का बहुतायत प्रयोग किया है। वे मानव आकृतियों के रूप स्वरूप को तो सजाते ही थे साथ–साथ उनके वस्त्रों की शालीनता, बुनावट, तथा सिलवटों का विशेष ध्यान रखते थे जरी, अरी का वस्त्रों में प्रयोग सजीव दिखता है। कहीं कहीं तो गोटा इतना सजीव चित्रित है कि हाथ से उसे उठा लो ऐसा प्रतीत होता है। छाया प्रकाश से चेहरे की गहराई, भाव मुद्राओं का अंकन सजीव प्रतीत होता है तथा रंगों में गजब की निरन्तरता चित्र को आकर्षक बनाती है।

अपनी आत्मप्रबल जिज्ञासा से उन्होंने हमेशा से इस बात पर महत्व दिया कि वे समाज को क्या दे रहे हैं कला जगत को क्या दे रहे हैं न कि आलोचना और अवमानना तथा हमेशा अपने आपको कार्य के लिये समर्पित रखा और प्रेरित किया।

रवि वर्मा ने कला के ऐसे मार्ग को अपनाया जो परम्परा से हटकर स्वतंत्र और प्रगतिशील था। अपनी नयी कलात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। रवि वर्मा ने अपनी स्वतः शैली का मूल्यांकन और चित्रण किया और अपनी स्वतः राह अन्वेषित करते गये तथा कला जगत के लिये नये कीर्तिमान के रूप में उल्लेखनीय हुए। निरन्तर गतिशील और कार्यशील होने के उद्देश्य से रवि वर्मा को महानता की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया, जो अमरत्व का रूप है। देश में ही नहीं विदेश में भी कीर्ति अर्जित करी तथा भारतीय कला को गौरवान्वित किया।

निष्कर्ष

आज हमारी कला अकादमिक शिक्षा भी इसी तैल और यथार्थ पर टिकी है। आज का भारतीय कलाकार नवीन से नवीन प्रयोग करने में हिचक महसूस नहीं करता है तथा यूरोप की तरफ आकर्षित है आज भारतीय कला जिस मुकाम पर खड़ी है उसकी भूमिका कहीं न कहीं रवि वर्मा द्वारा बनायी गयी थी। उन्हें भारतीय आधुनिक कला के पितामह कहना युक्तसंगत न होगा। केरल सरकार ने रवि वर्मा पुरस्कारम् तथा उनके नाम से कला विद्यालय की स्थापना करी परन्तु यह उनकी कला जगत को देन के मुकाबले कुछ भी नहीं है।

सुझाव

विश्व में कलात्मक दस्तक देने का कार्य रवि वर्मा बहुत पहले ही कर चुके है। एक बार पुरानी सभी बातों को भुला कर यदि फिर से रवि वर्मा की कार्यशैली, चित्रण विषय, व्यक्तित्व, राष्ट्रीय भावना पर विचार कर आत्मसात करें तो मुझे लगता है कि युवा पीढ़ी को इससे अवश्य लाभ प्राप्त होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. गोस्वामी प्रेमचन्द्र, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, पृ. सं. 38*
2. *डॉ गोस्वामी प्रेमचन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, पृ. सं., 9*[1]
3. *डॉ. अग्रवाल श्याम बिहारी, भारतीय चित्रकला का इतिहास, रूपशिल्प प्रकाशन, इलाहाबाद,*
4. *डॉ. मिश्रा प्रेमा , भारतीय सौंदर्य शास्त्र एवं ललित कलायें, परा प्रकाशन, कानपुर,*
5. *डा. नायर एन. चन्द्रशेखर, चित्रकला सम्राट राजा रवि वर्मा*
6. *Thakurta Tapti Gaha, "Ravi Varma the project of a new National Art" ,New Delhi, Pg. No. 45*
7. *Prof. Parimoo Ratan, The legacy of Raja Ravi Varma, The painter, Maharaja Fatesingh Museum Trust, Baroda*

पाद टिप्पणी

1. *डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, पृ. सं. 38*
2. *डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, पृ. सं., 9*
3. *Tapti Gaha Thakurta, "Ravi Varma the project of a new National Art" Pg. No. 45*